उनके लिये श्रीभगवान् ने इस श्लोक में यह उत्तर दिया—जो शुद्ध भक्तियोग में लगे हुए हैं, वे भक्त यदि पर्याप्त शिक्षा और वैदिक ज्ञान से विहीन भी हों, तो इस श्लोक के अनुसार भगवान् स्वयं उनकी सहायता करते हैं।

श्रीभगवान् अर्जुन से कहते हैं कि उनके तत्त्व को मनोधर्म से जानने की कोई सम्भावना नहीं है, क्योंकि परम सत्य इतना महान् है कि उसे केवल मानसिक प्रयास से जाना अथवा पाया नहीं जा सकता। श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण भाव के बिना करोड़ों वर्ष की मनोधर्मी के बाद भी उनका तत्त्वज्ञान नहीं होगा। परम सत्य श्रीकृष्ण केवल भक्तियोग से प्रसन्न होते हैं और अपनी अचिन्त्य शक्ति से शुद्धभक्त के हृदय में अपने को स्वयं प्रकट करते हैं। शुद्धभक्त के हृदय में श्रीकृष्ण का शाश्वत् निवास है; वे उस सूर्य के सदृश हैं, जो अज्ञानरूपी अन्धकार को हर लेता है। यह शुद्धभक्त पर श्रीकृष्ण की अशेष-विशेष कृपा है।

करोड़ों जन्म-जन्मान्तरों के विषयसंग के कारण जीव का चित्त निरन्तर विषयवासना रूपी मल से दूषित रहता है। परन्तु भक्तियोग में तत्पर होकर 'हरेकृष्ण' महामन्त्र का निरन्तर कीर्तन करने से यह मल तत्काल धुल जाता है और शुद्ध ज्ञान उद्दीप्त हो उठता है। परम लक्ष्य श्रीकृष्ण इस कीर्तन और भक्तिनिष्ठा से ही प्राप्त हो सकते हैं, मनोधर्म अथवा तर्क से नहीं। शुद्धभक्त जीवन की आवश्यकताओं के लिए कभी चिन्ता नहीं करता; उसे कोई चिन्ता नहीं सताती क्योंकि जब वह अज्ञान रूपी अंधकार से हृदय को शुद्ध कर लेता है, तो उसकी भक्ति से प्रसन्न हुए श्रीभगवान् स्वयं सब पदार्थ उपलब्ध करा देते हैं। यही गीता के शिक्षामृत का सार है। गीता-अध्ययन करके मनुष्य पूर्णरूप से श्रीभगवान् के शरणागत होकर शुद्ध भक्तियोग के परायण हो सकता है। संचालन की बागडोर जैसे ही प्रभु के पाणिपल्लवों में जाती है कि वह सब प्रकार के लौकिक प्रयत्नों से मुक्त हो जाता है।

अर्जुन उवाच।
परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्।।१२।।
आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।।१३।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **परम्**=चरम; **ब्रह्म**=सत्य; **परम्**=चरम; **धाम**=आश्रय; **पवित्रम्**=पावन; **परमम्**=परम; **भवान्**=आप (हैं); **पुरुषम्**=पुरुष; **शाश्वतम्**=सनातन; **दिव्यम्**=लोकोत्तर; **आदिदेवम्**=देवों के भी आदि देव; **अजम्**=अजन्मा; **विभुम्**=सब से महान्; **आहुः**=कहते हैं; **त्वाम्**=आपको; **ऋषयः**=ऋषि; **सर्वे**=सब; **देवर्षिः**=देवर्षि; **नारदः**=नारद; **तथा**=भी; **असितः**=असित; **देवलः**=देवल; **व्यासः**=व्यासदेव; **स्वयम्**=स्वयं आप; **च**=भी; **एव**=निःसन्देह; **ब्रवीषि**=कहते हैं; **मे**=मेरे प्रति।